Balance of Trade And Balance of Payment

Balance of Trade (व्यापार शेष) के अन्तर्गत आयातों और निर्यातों का विस्तृत विवरण रहता है किसी देश का व्यापार शेष या तो अनुकूल हो सकता है अथवा प्रतिकूल। जब एक देश के आयातों की तुलना में, उसके निर्यात अधिक होते हैं तो उसे अनुकूल व्यापार शेष कहा जाता है और जब निर्यात की तुलना में आयात अधिक होते हैं तो इसे प्रतिकूल व्यापार शेष कहते हैं।

Balance of Payment (भुगतान शेष) से किसी देश के समस्त आयातों एवं निर्यात एवं अन्य सेवाओं के मुल्य के सम्पूर्ण विवरण से होता है। इसका विवरण तैयार करते समय दोहरी प्रविष्टि प्रणाली अपनाई जाती है जिसमें शेष विश्व के साथ किसी देश के लेनदेन का विवरण होता है। इसके अन्तर्गत लेन-देन के दो पक्ष होते हैं एक ओर उस देश की समस्त देनदारियों का विवरण रहता है जिसे ऋणात्मक पक्ष कहते हैं तथा इसरी ओर देश की लेनदारी

मुद्रा की नागरिकों का निवास रहता है
स्थिति व्यापारिक पक्षा करते है।
विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा भुगतान शेष
की भिन्न परिभाषा दी गई है
प्रो० बेनहम (Prof Benham) के अनुसार
" किसी देश का भुगतान शेष, उसका
शेष विश्व के साथ एक समय की
अवधि में किए जाने वाले मौद्रिक
लेन देन का विवरण है जबकि एक देश
का व्यापार शेष एक निश्चित अवधि
में उसके आयातों एवं निर्यातों के बीच
सम्बन्ध है।"

किण्डलबर्गर के अनुसार " किसी देश का
भुगतान सन्तुलन उस देश के नागरिकों तथा
विदेशी देश के निवासियों के बीच एक
निश्चित अवधि में होने वाले समस्त आर्थिक
लेन-देन का क्रमबद्ध ब्यौरा है।"

भुगतान- शेष सदैव सन्तुलन में रहता है
Balance of Payment always Balances

एक देश का व्यापार- शेष भले ही सन्तुलन
में न रहे, पर भुगतान शेष सदैव सन्तुलन
की स्थिति में रहता है। व्यापार- शेष
का आशय माल के आयात और
निर्यात से होता है। जब किसी देश के

निर्यात का मूल्य, आयात मूल्य से अधिक होता है, तो उस देश का व्यापार-शेष उसके पक्ष में होता है। किन्तु व्यापार-शेष से देश की सम्पूर्ण आर्थिक-स्थिति का ज्ञान नहीं होता तथा इसमें असन्तुलन हो सकता है।

जहाँ तक भुगतान-शेष का सम्बन्ध है, चूँकि इसका विवरण बहीखाते के समान दोहरी प्रविष्टि (Equal Dual Entry) लेनदारी और देनदारी के आधार पर तैयार किया जाता है और यदि सारी प्रविष्टियाँ सही ढंग से की जाती हैं तो कुछ लेनदारियाँ कुछ देनदारियों के बराबर होती हैं। इसका कारण यह है कि लेन देन के दोनों पक्ष योग राशि में बराबर होते हैं और इनमें एक दूसरे के विरुद्ध दिशा में लिखा जाता है। अतः लेखा के सन्दर्भ में भुगतान-शेष, सदैव सन्तुलन में रहता है। यह बात दूसरी है कि इन दोनों के अन्तर को, ऋण द्वारा पूर्ति करके, समान दिखाया जाता है। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि इसप्रकार के सन्तुलन में, चालू खाता

और पूंजी खाता दोनों को दृष्टि में रखना आवश्यक है। यदि केवल चालू खाते को लिया जाए तो भुगतान शेष, असन्तुलित हो सकता है। यहाँ इन दोनों का अर्थ समझना आवश्यक है।

चालू खाते (current account) के अन्तर्गत लेन-देन के फलस्वरूप किए जाने वाले अथवा प्राप्त होने वाले उन भुगतानों का समावेश होता है जो चालू (एक) वर्ष में पूरा किए जाते हैं। पूंजी खाते (capital account) के अन्तर्गत उन मुद्दों को सम्मिलित किया जाता है जिनके द्वारा चालू खातों में प्रविष्ट भुगतान सम्भव होते हैं अर्थात, आयात निर्यात एवं सेवाओं के बदले प्राप्त एवं देय भुगतानों को सम्भव बनाने वाली मदें पूंजी खाते में सम्मिलित की जाती हैं। पूंजी खाते से किसी देश की अन्तर्राष्ट्रीय विनियोग अथवा ऋणग्रस्तता सम्बन्धी स्थिति का ज्ञान होता है। इन दोनों में वही